एम.आर. मोरारका–जीडीसी रूरल रिसर्च फाउण्डेशन

स्टेशन रोड़, नवलगढ़, झुन्झुनू (राजस्थान)

स्वयं सहायता समूह – एक नजर

पृष्ठभूमि

स्त्री सशक्तिकरण का विषय हमारे लिए नवीन नहीं है। इस विषय में अनेक प्रयास करने के बावजूद भी संतोषप्रद उपलब्धि हासिल नहीं हो पाई है। इस दिशा में मोरारका फाउण्डेशन द्वारा नवलगढ़ में एक प्रयास किया गया। जिसमें ग्राम पंचायत स्तर पर महिला जागरूकता कार्यक्रम की शुरूआत की गई। जिसमें सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी देने का कार्य किया गया। सरकार की योजनाओं में आपसी तालमेल न होने के कारण व्यवहारिक रूप से उनकी सफलता क्रियान्वित नहीं हो पाई। लेकिन महिला स्वयं सहायता समूह ही एक ऐसा बिन्दू प्रतीत हुआ, जिसके माध्यम से इन सभी योजनाओं का सफल क्रियान्वयन हो सके। इसकी सहायता से ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिवर्तन संभव हुआ। इसमें 6 माह तक अपनी ही बचत से एक–दूसरे को ऋण देकर मदद की गई। यह एक मिनी बैंक के समान प्रणाली साबित हुई। इसमें उन्हें बैंक की जटिल प्रक्रिया से वाकिफ करवाया गया ताकि बाद में बैंक की प्रक्रिया को समझने में कोई कठिनाई नहीं हो।

महिला स्वयं सहायता समूह क्या है ?

महिला स्वयं सहायता समूह 10 से 20 महिलाओं को छोटा समूह है। इस समूह में आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से समान सदस्य शामिल किये जाते हैं। ये सदस्य अपना निर्णय स्वयं लेकर अपनी सहायता समूह करते हैं। प्रतिमाह एक निश्चित तिथि को इसकी एक बैठक का आयोजन किया जाता है। जिसमें पूर्व निर्धारित राशि एकत्रित की जाती है। यह राशि जरूरतमंद महिला को नियमानुसार ऋण के रूप में प्रदान की जाती है।

फरवरी, 1992 में नाबार्ड द्वारा बैंकों को स्वयं सहायता समूह से जोड़ने की प्रासंगिक योजना का शुभारम्भ हुआ। जिसका उद्देश्य ऋण की आवश्यकता को पूरे लोच (Flexiblity) के साथ पूरा किया जा सके। बैंक व ग्रामीणों के बीच परस्पर विश्वास को सुदृढ़ बनाया जा सके। बचत व ऋण से संबंधित बैकिंग गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जा सके। इसका मुख्य उद्देश्य यह विश्वास जगाना था, कि ऋण प्राप्त करना कठिन नहीं है।

स्वयं सहायता समूह की मुख्य विशेषताऐं

स्वयं सहायता समूह 10 से 20 महिलाओं का एक ऐसा समूह है, जो Homogeneous समूह होता है। इसमें सदस्यता बढ़ाने का प्रावधान होता है। समूह अपनी कार्यप्रणाली के लिए पूर्णरूप से स्वतंत्र होता है। एक स्वयं सहायता समूह में अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष एक ही परिवार के नहीं होते। इसमें एक महिला केवल एक समूह की सदस्य ही बन सकती है।

इस समूह में नियमावली सभी सदस्यों की आपसी सहमति से ही तैयार की जाती है और प्रतिमाह एकत्रित की जाने वाली राशि भी सदस्यों के द्वारा ही परिचालित की जाती है। समूह में प्रत्येक सदस्य को चर्चा में भाग लेने का अधिकार होता है। इससे सभी सदस्यों में एक दूसरे की मदद करने की भावना जागृत होती है। स्वयं सहायता समूह का बैंक में एक बचत खाता होता है।

शेखावाटी में स्वयं सहायता समूह की शुरूआत

मोरारका फाउण्डेशन द्वारा स्वयं सहायता समूह के जरिये समाज में फैली भ्रांतियां दूर कर आपसी मेलजोल का वातावरण, महिला मण्डल बनाना और इसका तात्पर्य बताया गया। इसके लिए एक स्थान जैसे घर या छायादार पेड़ निर्धारित किया गया। जहां पर सभी महिलायें जोश के साथ भाग ले सकें। इन स्वयं सहायता समूह योजनाओं के द्वारा मौके पर ही सदस्यों को लाभान्वित किया जाता था। आर्थिक लाभ के अलावा अन्य समस्याओं को धैयपूर्वक सुनकर उनका यथासंभव समाधान किया जाता। चारा, पानी, श्रम तथा रोजगार का अवलोकन किया गया। इस समूह की बैठक में एक विश्वास का वातावरण तैयार करने के पश्चात् ही महिला स्वयं सहायता समूह की जानकारी दी गई।

मोरारका फाउण्डेशन द्वारा प्रथम स्वयं सहायता समूह का गठन सन् 1993 में किया गया। दूर–दराज के गांवों में गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाओं के समूह बनाने का कार्य शेखावाटी के नवलगढ़ एवं झुन्झुनू क्षेत्र में प्रारम्भ किया गया। जैसे घोड़ीवारा कलां, मोहब्बतसरी, जाटवाली, मुकुन्दगढ़, घोड़ीवारा खुर्द, अजीतपुरा, तेतरा, मझाऊ, ढ़ाणी मझाऊ, नाहरसिंघानी, ढ़िगाल, बलवन्तपुरा, चैलासी, कसेरू, झरड़ा की ढ़ाणी आदि।

संस्था को सन् 2000 में नाबार्ड से प्रोजेक्ट मिला। इस प्रोजेक्ट के तहत् 100 स्वयं सहायता समूह बनाये गये। बैंक में इनके बचत खाते खुलवाये गये। आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को बैंकों से ऋण भी दिलवाया गया। इस ऋण के जरिये आय के स्त्रोतों में वृद्धि का कार्य किया गया। जैसें गाय, भैंस एवं बकरी खरीदना। किसी महिला द्वारा सब्जी व किराणा की दुकान खोलना और किसी महिला सदस्य द्वारा अपने पुत्र को गधागाड़ी लाकर देना, ताकि आय में वृद्धि की जा सके।

मोरारका फाउण्डेशन द्वारा नवलगढ़, उदयपुरवाटी, झुन्झुनूं, व सीकर में संचालित स्वयं सहायता समूहों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिये गये। जैसे वर्मी कम्पोस्ट बनाना, बूंदी–बंधेज, फुल गोटे का कार्य, बूंटी बनाने का कार्य, दरी बनाने का कार्य, कैरी बैग बनाने का कार्य, पायदान, झूला, पापड़, मंगोड़ी बनाने का कार्य करना आदि।

कुल 120 स्वयं सहायता समूहों से लगभग 2255 महिलायें लाभान्वित हुई। जिनका बैंक से 78,24,000/– रूपये का ऋण दिलवाया गया और इन्टर लोन 1 करोड़ पन्द्रह लाख रूपये का दिया गया।

कार्यक्रम समन्यवयक
मोरारका फाउण्डेशन

एम.आर. मोरारका–जीडीसी रूरल रिसर्च फाउण्डेशन

स्टेशन रोड़, नवलगढ़, झुन्झुनू (राजस्थान)

स्वयं सहायता समूह ने दी जीवन जीने की आशा

स्वयं सहायता समूह का नाम – बालाजी स्वयं सहायता समूह
वार्ड न० 23, नवलगढ़ में समूह की सदस्य श्रीमती शान्ति देवी

नवलगढ़ कस्बे की बिरोल रोड से उत्तर में स्थित हरिजनो के मौहल्ले में रहने वाली **शान्ति देवी** व उसका परिवार बहुत दुःखी था। उसके मौहल्ले में श्रीमती ग्यारसी देवी के घर पर **मोरारका फाउण्ड़ेशन के विनोद देवी** द्वारा स्वयं सहायता समूह बनाने की चर्चा सुनकर शान्ति देवी मिटिंग में पहुची। बातें तो बहुत अच्छी लगी पर घर में खाने को अनाज नहीं, बात बचत की हो रही थी। शान्ति देवी को समूह की सदस्य बनने को कहा तब महिलाओ ने उसे समूह का सदस्य बनाने से मना कर दिया, क्योंकि घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। मोरारका फाउण्डेशन की विनोद देवी ने शान्ति देवी को समूह का सदस्य बनने के लिए प्रेरित किया।

शान्ति देवी को आयवर्द्धक कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी गई। शान्ति देवी ने समूह में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया खुद का पेट काट काटकर एक–एक रूपया बचाकर बचत शुरू की। सालभर बाद बचत करना आदत बन गई। सन 2009 में समूह से 10,000 रूपयें का ऋण लेकर बेटे को किराणा एंव सब्जी की छोटी सी दुकान का काम शुरू करके दिया।

इसके साथ – साथ शान्ति देवी ने किसी साहूकार के घर पर जाकर घर का काम व खाना बनाना शुरू किया। जब दुकान व स्वयं की मजदूरी से लिये गये ऋण पर हर महिने 1000रू की किश्त ब्याज सहित चुकाना शुरू कर दिया। स्वयं की मजदूरी से कुछ रूपया बचाकर अपनी बेटी को विद्यालय पढ़ने भेजा। उसके बाद शान्ति देवी ने सन 2010 में पुनः 20,000 रूपयें का ऋण लेकर दुकान को ओर अधिक बढाया। वर्तमान में शान्ति देवी के परिवार की आमदनी प्रति महिने 4000 रू. से 5000 रू. हो गयी शान्ति देवी का कहना है कि मेरी परिवार की इज्जत आस–पडोस में भी काफी बढ़ गयी है।

शान्ति देवी का मानना हैं कि उस समय जब उसका बेटा कुछ नही कमाता था। उस समय मोरारका फाउण्डेशन द्वारा यह रास्ता नही दिखाया जाता तो मेरे परिवार ने नवलगढ छोडने का निश्चय कर लिया था। शान्ति देवी का कहना है कि ऐसे समूह सम्पूर्ण देश में चलायें जाये, जिससे गरीब महिलाओं को शोषण से बचाया जा सके। शान्ति देवी बहुत खुश हैं, क्योंकि उसके परिवार को सामाजिक व आर्थिक स्थिति से समाज में हीन भावना से देखा जाता था। पर अब मेरे परिवार को समाज में अच्छी नजर से देखा जाता है। तथा समाज के लोगो के साथ मेरे परिवार के अच्छे सम्बंध भी बन गये है।

शान्ति देवी मोरारका फाउण्डेशन को धन्यवाद देती है और आभार व्यक्त करती है।

कार्यक्रम समन्यवयक
मोरारका फाउण्डेशन

एम.आर. मोरारका–जीडीसी रूरल रिसर्च फाउण्डेशन

स्टेशन रोड़, नवलगढ़, झुन्झुनू (राजस्थान)

स्वयं सहायता समूह से मिला महिलाओं को आमदनी बढाने में सहयोग

श्रीमती सज्जन कंवर घोडीवारां की रहने वाली है और उनके परिवार में आठ सदस्य है। इसके पति गांव में ही मेहनत मजदूरी करके बच्चों का पेट पालता है। बढती हुई महगाई को देखते हुऐ उनके बच्चों का भरण पोषण करना भी मुश्किल हो गया। तब सज्जन कंवर में स्वयं सहायता समूह के बारे में चर्चा सुनी मोरारका फाउण्डेशन के विनोद देवी द्वारा स्वयं सहायता समूह की मीटिंग में पहुँची। सज्जन कंवर को समूह की बाते तो बहुत अच्छी लगी परन्तु पति की मजदूरी से घर का खर्चा भी चलना मुश्किल था।

मोरारका फाउण्डेशन की विनोद देवी ने समूह की महिलाओं से सज्जन कंवर को समूह की सदस्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया तथा कहा कि सफल समूह वही होता है जो गरीब महिलाओं को साथ लेकर चलता हैं।

सज्जन कंवर को रोजगार कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी गई तथा सज्जन कंवर को समूह से सन 2010 में 2000 रूपये का ऋण दिया गया। सज्जन कंवर अपनी मजदूरी का कुछ हिस्सा बचाकर समूह का ऋण चुका दिया तथा 2011 में सज्जन कंवर को समूह ने 20,000 रूपये का ऋण दिया तथा उस रूपये से उसने गाय खरीदी। गाय का दूध बेचकर समूह का ऋण चुकाया तथा कुछ पैंसे बचाकर अपने बच्चों को विद्यालय में दाखिला दिलाया।

इसके बाद समूह से 40,000 रूपये का ऋण लिया तथा दो और गाय खरीदी तथा एक लघु डेयरी उद्योग प्रारम्भ किया। डेयरी उद्योग से सज्जन कंवर को खूब फायदा हुआ। तथा उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो गयी अब उसके पति मजदूरी की जगह अपनी छोटी सी डेयरी को बढ़ाने में लगे है।

सज्जन कंवर मोरारका फाउण्डेशन का आभार व्यक्त करती है कि फाउण्डेशन ने समूह द्वारा महिलाओं को आमदनी बढाने का एक जरिया उपलब्ध कराया।

कार्यक्रम समन्यवयक
मोरारका फाउण्डेशन

एम.आर. मोरारका–जीडीसी रूरल रिसर्च फाउण्डेशन

स्टेशन रोड़, नवलगढ़, झुन्झुनू (राजस्थान)

स्वंय सहायता समूह के कारण महिला ने समाज में अपना नाम रोशन किया

नाहरसिंघानी गांव में मोरारका फाउण्डेश के विनोद देवी द्वारा लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह की मीटिंग चल रही थी उस मीटिंग में परमेश्वरी देवी नाम की महिला आई उसने सुना था, की, इस मीटिंग में महिलाओं को ऋण दिया जाता है, जबकि वह स्वयं सहायता समूह के बारे में अनभिज्ञ थी। मीटिंग खत्म होने के बाद फाउण्डेशन के प्रतिनिधि ने उसे स्वयं सहायता समूह के बारे में समझाया, इसमें सभी सदस्य एक ही जाति व समान आर्थिक स्थिति वाले होते हैं।

परमेश्वरी देवी के परिवार में शिक्षा का अभाव था तथा आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं थी तथा परिवार भी बड़ा था और इनके पति इन्हे घर से बाहर नहीं निकलने देते थे। समूह की अध्यक्ष श्रीमती कमला, सचिव सावित्री देवी व अन्य सदस्यों का कहना है कि समूह बनाने से पहले हमारे पति भी घर से बाहर नही भेजते थे।

सन 2000 से मोरारका फाउण्डेशन ने हमारा समूह बनाया समूह से 10,000रू का ऋण लिया तथा उससे 2 बकरी खरीदी तथा कुछ समय बाद उस ऋण को वापस कर दिया इसके बाद प्रतिवर्ष समूह से ऋण लिया तथा समूह का बैंक से लिंकेज करवाया बैंक से समूह को अब तक 5,00,000रू का ऋण लिया उसमें से 50,000रू का ऋण समूह के माध्यम से लिया इस ऋण से कई और बकरियाँ खरीदी इन बकरियों का दूध बेचकर मैनें बैंक लॉन को वापस कर दिया।

आज मेरे पास 10 बकरियाँ है तथा मेरी आर्थिक स्थिती बहुत सुदृढ़ है जिससे हमारी व हमारे परिवार की ईज्जत समाज में बहुत बढ़ गई है। श्रीमती परमेश्वरी देवी का कहना है कि जीवन में आर्थिक व सामाजिक दोनो स्थिति एक दूसरे सें जुडी हुई कडी होती है ।

एक दिन वो था कि घर में बचत का नाम नही था आज वो दिन देखने को मिला कि हमारे एक सदस्य की बचत 11,600 हो चुकी है और हमारा व्यवहार बैंक के साथ एक महाजन जैसा हो गया आर्थिक स्थिति तो सुधरी जैसी ही हमारे चेहरे पर चमक आने लगी यह सब देन मोरारका फाउण्डेशन की रही है।

कार्यक्रम समन्यवयक
मोरारका फाउण्डेशन